



आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा का पाक्षिक मुखपत्र अक्टूबर 2017 (द्वितीय)





सिसाना, सोनीपत में पर्यावरण शुद्धि यज्ञ करते हुए सभा प्रधान मा० रामपाल आर्य।



सिसाना, सोनीपत में पर्यावरण शुद्धि यज्ञ के दौरान सभा को सम्बोधित करते हुए मा० रामपाल आर्य।



सै० 4, तिकोना पार्क, रोहतक में दीपावली के अवसर पर पर्यावरण शुद्धि यज्ञ करते हुए मा० रामपाल आर्य।



हुड्डा सिटी पार्क, रोहतक में दीपावली के अवसर पर पर्यावरण शुद्धि यज्ञ करते हुए आचार्य सर्वमित्र आर्य।



छोटाराम स्टेडियम, रोहतक में दीपावली के अवसर पर पर्यावरण शुद्धि यज्ञ करते हुए श्री सुभाष सांगवान व डा० जगदीश सिंह।



मेहर सिंह अखाड़ा, रोहतक में दीपावली के अवसर पर पर्यावरण शुद्धि यज्ञ करते हुए श्री रोशन आर्य व श्री सुशील आर्य।



सिनियर सिटीजन क्लब, सै० 2-3, रोहतक में पर्यावरण शुद्धि यज्ञ करते हुए आचार्य सर्वमित्र आर्य, मा० रामपाल आर्य व कुलदीप भास्कर



विकास नगर पार्क, रोहतक में दीपावली के अवसर पर पर्यावरण शुद्धि यज्ञ करते हुए श्री सुरेन्द्र दहिया।

सृष्टि संवत् 1,96,08,53,118
विक्रम संवत् 2074
दयानन्दाब्द 194

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
की
मुख-पत्रिका

वर्ष 13 अंक 18

सम्पादक :
उमेद शर्मा

पत्रिका-शुल्क

देश में
वार्षिक-200 रुपये आजीवन-2000 रुपये

विदेश में
वार्षिक शुल्क 100 डॉलर
आजीवन 400 डॉलर

पत्रिका का स्वामित्व

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि०)
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ,
गोहाना रोड, रोहतक-124001

सम्पादक-मण्डल

1. आचार्य सोमदेव
2. डॉ० जगदेव विद्यालंकार
3. श्री चन्द्रभान सैनी

सम्पादकीय विभाग

सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक
सम्पर्क सूत्र-
चलभाष : 89013 87993
कार्यालय : 01262-216222

॥ ओ३म् ॥

आध्यात्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय चिन्तन एवं
वैदिक जीवन मूल्यों की पाक्षिक पत्रिका
आर्य प्रतिनिधि

अक्टूबर, 2017 (द्वितीय)
16 से 30 अक्टूबर, 2017 तक

इस अंक में....

- | | |
|---|----|
| 1. मानव जीवन में गीता | 2 |
| 2. सत्यार्थप्रकाश प्रश्नोत्तरी | 5 |
| 3. सदा सुख की चाहत | 6 |
| 4. कविता : पौराणिक मित्रों से प्रार्थना | 8 |
| 5. रोहिङ्या मुसलमान : मजहबी उन्माद | 9 |
| 6. गुरु-शिष्य—बिगड़ते रिश्ते | 10 |
| 7. स्वास्थ्य चर्चा.... | 11 |
| भूलकर भी न पीएं फ्रिज का पानी | |
| 8. वेदों की ओर लौटो अभियान में तेजी लाई जाएगी | 13 |
| 9. श्री कृष्णचन्द्र के गुण गाओ | 14 |
| 10. योग व चरित्र निर्माण शिविर सम्पन्न | 14 |
| 11. समाचार-प्रभाग | 15 |

सूचना

सभी आर्यसमाजों को, आर्य शिक्षण संस्थाओं को सूचित किया जाता है कि अपने सभी प्रकार के प्रचार कार्यक्रमों का विवरण 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक पत्रिका में छापने के लिए भेजें। साथ ही विद्वानों, लेखकों, बुद्धिजीवियों से आग्रह है कि वे अपने लेख, कविता आदि निम्न ई-मेल अथवा पते पर भेजें।

सम्पादक 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001

E-mail : aryapsharyana@yahoo.in

Website : www.apsharyana.org

मानव जीवन में गीता

—डॉ० जगदेव विद्यालंकार (सेवानिवृत्त प्राचार्य) 667-ए/29 तिलक नगर, रोहतक

समस्त संसार में मनुष्य परमपिता परमात्मा की सर्वोत्तम कृति है। मनुष्येतर समस्त प्राणियों को ईश्वर ने भोग योनि ही बनाया जबकि मनुष्य भोग योनि के साथ-साथ कर्म योनि भी है। मानव मननशील, चिन्तनशील, बुद्धिमान् एवं कर्म करने में स्वतन्त्र है। अतः मनुष्यों के कल्याण के लिए परमेश्वर ने सृष्टि के प्रारम्भ में वेद का सत्य ज्ञान प्रदान किया क्योंकि सब सत्य विद्याओं का आदिमूल परमेश्वर ही है। अपौरुषेय होने से वेदज्ञान पवित्रतम है। पौरुषेय कृतियों में गीता का स्थान परित्रता में सर्वोत्कृष्ट है। कुरुक्षेत्र की रणभूमि में महाभारत का युद्ध प्रारम्भ होने से पूर्व कुशल राजनीतिज्ञ, धर्म संस्थापक, महामानव योगेश्वर कृष्ण द्वारा मोहग्रस्त अर्जुन को दिया गया उपदेश ही गीता है जिसे महाभारतकार महर्षि वेदव्यास ने अपने ग्रन्थ में ही समाहित कर लिया था।

भारतीय वाङ्मय में गीता सर्वाधिक लोकप्रिय ग्रन्थ है। गीता सरल संस्कृत भाषा में लिखा हुआ रहस्यमय ज्ञान का ऐसा ग्रन्थ है जिसका माहात्म्य अवर्णनीय है। इसका आशय इतना गंभीर है कि पाठक को हरेक बार नये-नये भावों की प्राप्ति होती है। गीता का इतना व्यापक स्तर पर प्रसार हो चुका है कि हिन्दी भाषा के अतिरिक्त गुजराती, मराठी, उड़िया, बंगला, तमिल, तेलुगू, कन्नड़, मलयालम, पंजाबी, असमिया आदि समस्त भारतीय भाषाओं तथा अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन, रसियन, जापानी, चीनी, स्पेनिश, उर्दू, अरबी आदि विदेशी भाषाओं सहित कुल 59 भाषाओं में गीता का अनुवाद हो चुका है।

मानव जीवन में गीता के महान् उपदेश के योगदान से प्रभावित होकर महर्षि वेदव्यास जी ने महाभारत में गीता का वर्णन करने के उपरान्त कहा है—‘गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तारैः’ गीता सुगीता करने योग्य है अर्थात् गीता का मनोयोग से ध्यान पूर्वक श्रवण तथा अध्ययन करना चाहिए। वर्तमान अर्थप्रधान युग में सांसारिक व्यस्तताओं के कारण मनुष्य विस्तृत वैदिक साहित्य का स्वाध्याय नहीं कर पाता अतः एक पुस्तक गीता ही पर्याप्त है क्योंकि यह समस्त वैदिक ग्रन्थों का सार है।

गीता की महिमा का वर्णन करते हुए गीता माहात्म्य में लिखा है—

मलिने मोचनं पुंसां जलस्नानं दिने दिने।

सकृद्गीतामृतस्नानं संसारमलनाशनम्॥

‘अर्थात् जल में स्नान करके मनुष्य अपने शरीर को निर्मल एवं स्वच्छ कर सकता है लेकिन भगवद्गीता रूपी पवित्र जल में एक बार स्नान करने से भवसागर की मलीनता से ही मुक्त हो जाता है।’

जिस प्रकार से गीता को विद्वानों ने वेदों का सार कहा उसी प्रकार गीता माहात्म्य में गीता को निम्नलिखित श्लोक में रूपकालंकार के सौन्दर्य के द्वारा उपनिषदों का सार भी बताया है—

सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपालनन्दनः।

पार्थो वत्सः सुधीभोक्ता दुग्धं गीतामृतं महत्॥

‘यह गीतोपनिषद् अर्थात् भगवद्गीता, जो समस्त उपनिषदों का सार है, गाय के तुल्य है और गोपाल कृष्ण इस गाय को दुह रहे हैं। अर्जुन बछड़े के समान हैं तथा समस्त बुद्धिमान् पवित्र भक्त गीता के अमृततुल्य दुग्ध का पान करने वाले हैं।’ इस प्रकार मानव जीवन में गीता की महिमा, उपयोगिता एवं उपादेयता असंदिग्ध है।

श्रीकृष्ण जी का स्वयं का जीवन उत्कृष्ट कोटि का था, वे उदात्त थे, महान् थे। मानव मात्र के लिए उनका चरित्र आदर्श और अनुकरणीय था। महर्षि दयानन्द अपने ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं कि पांच हजार वर्ष के इतिहास में श्रीकृष्ण जी जैसा उत्कृष्ट कोटि का महामानव दूसरा कोई नहीं हुआ। जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त उन्होंने कोई पाप नहीं किया। अतः गीता में श्रीकृष्ण ने मोहग्रस्त, विषादग्रस्त एवं पथभ्रष्ट अर्जुन को जो उपदेश दिया है वह सार्वकालिक और सार्वभौमिक है। अतः आज भी मानव मात्र के लिए प्रासंगिक है।

जब अर्जुन स्वतनघात से कातर होकर धनुष रख देता है तो श्रीकृष्ण जी उसे उत्साहित करते हुए कहते हैं—

क्लैव्यं मा स्म गमः पार्थ नैतत्त्वय्युपपद्यते।

क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ परंतप॥

हे अर्जुन! नपुंसकता मत पकड़। यह रूप तेरे साथ मेल नहीं खाता। हे महान् तपस्वी! उस क्षुद्र हृदय की दुर्बलता को छोड़कर खड़ा हो जा।

जब अर्जुन कर्तव्य पथ से विचलित होकर धर्मरक्षा की अपेक्षा स्वजनों की रक्षा को ही अपना कर्तव्य मान बैठता है तो श्रीकृष्ण जी उसे आत्मा और शरीर के स्वरूप को समझाते हुए कहते हैं—

न जायते म्रियते वा कदाचित् नायं भूत्वा भविता वा न भूयः ।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे ॥

‘यह अनादि अनन्त जीवात्मा न कभी पैदा होता है न मरता है, यह कभी होकर और कभी नहीं होगा, ऐसा नहीं है। यह अजन्मा नित्य शाश्वत अर्थात् निरन्तर चेष्टाशील सनातन तत्त्व है। शरीर के मारे जाने पर यह नहीं मरता।’ आत्मा की अमरता का वर्णन करते हुए श्रीकृष्ण पुनः कहत हैं—

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः ।

न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः ॥

‘इस शरीर के स्वामी जीवात्मा को शस्त्र काट नहीं सकते। आग जला नहीं सकती। पानी गला नहीं सकता। पवन सुखा नहीं सकता।’ मृत्यु तो वस्त्र परिवर्तन के समान है— वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि । तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही ॥

‘जिस प्रकार मनुष्य फटे-पुराने वस्त्र उतार कर दूसरे नए ग्रहण कर लेता है इसी प्रकार जीवात्मा पुराने शरीर छोड़कर दूसरे नए ग्रहण करता है।’ मृत्यु को अवश्यम्भावी बताते हुए श्रीकृष्ण अर्जुन को पुनः समझाते हैं—

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च ।

तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि ॥

‘जो पैदा हुआ है उसकी मृत्यु निश्चित है, जो मरा है उसका जन्म निश्चित है। इस प्रकार जो अवश्यम्भावी घटना है उस पर शोक मनाना तुझे उचित नहीं।’ अर्जुन के माध्यम से मानव मात्र को मृत्युरूपी भयंकर सांसारिक दुःख से उबारने का गीता का यह सर्वोत्तम उपदेश है।

कर्तव्यपरायणता पर बल देते हुए श्रीकृष्ण अर्जुन को निष्काम कर्म का संदेश देते हुए कहते हैं—

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।

मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि ॥ 2.47

‘हे अर्जुन! तेरा कर्म में ही अधिकार है उसके फल में कभी नहीं। तू कर्मफल का हेतु मत बन, अकर्म में तेरी प्रीति नहीं होनी चाहिए।’ यहां अकर्म से अभिप्राय वह कर्म है जिसमें लोकहित न हो अतः कर्त्ता को फल की चिन्ता किये बिना लोक कल्याणकारी कर्म करने चाहिए। श्रीकृष्ण जी वेद के मर्मज्ञ विद्वान् थे अतः उन्होंने यजुर्वेद के निम्नलिखित मन्त्र से प्रेरणा लेकर निष्काम कर्म का उपदेश दिया है—

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः ।

एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे ॥

यजु० 40.2

अर्थात् हे मनुष्य! तुम इस संसार में सौ वर्ष तक कर्म करते हुए जीने की इच्छा करो अर्थात् सम्पूर्ण जीवन कर्म में लगे रहो क्योंकि शुभकर्म जीव के लिए बन्धन का कारण नहीं होते।

कर्म करना मनुष्य का धर्म है, अतः वेद में अन्यत्र कहा—‘अकर्मा दस्युः’ अर्थात् कर्म न करने वाला राक्षस होता है। अतः गीता में कहा—‘योगस्थ कुरु कर्माणि’ योग में स्थित होकर कर्मों को करो और समत्व भाव को ही योग कहा गया है—समत्वं योग उच्यते ।

इसी क्रम में श्रीकृष्ण अर्जुन को स्थितप्रज्ञता का उपदेश देने के बहाने समस्त मानव जाति को वासनाओं और दुर्गुणों से बचने का सत्परामर्श देते हैं—

ध्यायतो विषयान्पुंसः संगस्तेषूपजायते ।

संगात्सञ्जायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते ॥ 2.62

क्रोधाद् भवति सम्मोहः सम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः ।

स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति ॥ 2.63

‘आहा! कितना स्वादिष्ट लड्डू था’ इत्यादि शब्दों से आकर्षणपूर्वक किन्हीं भी इन्द्रियों के विषयों का ध्यान करते हुए मनुष्य की उस ध्येय वस्तु में आसक्ति उत्पन्न हो जाती है, आसक्ति से फिर किसी भी उपाय से उस वस्तु को प्राप्त करने की कामना उत्पन्न हो जाती है, फिर उस कामना की पूर्ति में कोई बाधा पड़े तो क्रोध उत्पन्न हो जाता है। क्रोध से कार्य के परिणाम का विवेक नहीं रहता। तब उसने किसको क्या वचन दिया था यह स्मृति भी नष्ट हो जाती है, फिर स्मृति के नाश से मनुष्य बुद्धिहीन हो जाता है और बुद्धि के विनाश से मनुष्य ही नष्ट हो जाता है।’ अतः सभी मनुष्यों को अपनी इन्द्रियों को वश में रखना चाहिए। आदि

शंकराचार्य ने कहा था इन्द्रियां मनुष्य की सबसे बड़ी मित्र हैं यदि वश में हों तो और इन्द्रियां ही मनुष्य की सबसे बड़ी शत्रु हैं यदि वश में न हों तो।

वेद और समस्त वैदिक साहित्य में यज्ञ की महिमा का वर्णन किया गया है। शतपथ ब्राह्मण में 'यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म' कहकर यज्ञ को दुनिया का सर्वश्रेष्ठ कर्म कहा। यज्ञ मानवमात्र के लिए कल्याणकारी है। गीता में भी विस्तार से इस रहस्य का उद्घाटन किया है—

इष्टान्भोगान्हि वो देवा दास्यन्ते यज्ञभाविताः ।

तैर्दान्तान्प्रदायैभ्यो यो भुङ्क्ते स्तेन एव सः ॥ 3.12

'लोकहित की भावना से संगठित होकर पूजा किए हुए देव तुम्हें अभीष्ट भोग प्रदान करेंगे। उनके दिए हुए के बदले में उन्हें कुछ दिए बिना जो भोग करता है उसे डाकू या चोर समझो।'

यहां देव से अभिप्राय जड़ और चेतन दोनों देवों से है। धरती से हम अन्न ले लें और खाद के रूप में उसे वापिस न करें तो यह डाका है। आज हम अनेक वैज्ञानिक उपायों से लाखों मन कोयला धरती माता से निकाल रहे हैं। जब तक उन गड्डों को समतल करके खाद डालकर उपजाऊ न बना लें तब तक यह कोयला आदि खोदना डाका ही कहा जाएगा। इसी प्रकार गुरु से विद्या ग्रहण करके सेवा न करना भी डाके के समान है। इस प्रकार यज्ञ हमें सच्ची देवपूजा की प्रेरणा देता है।

वेद में लिखा है 'केवलाघो भवति केवलादी' अर्थात् अकेला खाने वाला पाप खाता है। इसी महान् संदेश को गीता में भी इसी प्रकार से व्यक्त किया है—

यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः ।

भुञ्जते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात् ॥

'यज्ञ से बचा हुआ खाने वालों को सब पाप छोड़ जाते हैं किन्तु जो केवल अपने लिए भोजन पकाते हैं, वे तो पाप ही खाते हैं।'

इस श्लोक में यज्ञशेष खाने का सदुपदेश दिया है। समाज के सभी वर्गों को त्याग भाव से और कर्तव्य भाव से कर्म करना चाहिए, वही सच्चा यज्ञ है। ब्राह्मण लोक कल्याण के लिए अपना समय ज्ञानोपार्जन और ज्ञानदान में लगाता है तथा अपने भोजन में से वैश्वदेव बलि के लिए थोड़ा-सा इसलिए निकालता है कि मैं प्राणिमात्र का ऋणी हूँ। मुझे

लोक कल्याण के लिए जीना है और जीने के लिए खाना है। इसी प्रकार क्षत्रिय अज्ञान-निवारण के लिए, वैश्य अभाव के निवारण के लिए तथा शूद्र सेवा के लिए व्रतधारी होकर जीते हैं और जीने के लिए खाते हैं, यही यज्ञशेष है, यही कृतज्ञता है और यज्ञ का संदेश है। यज्ञ का बाह्य लाभ जहाँ वायु को सुगन्धित करके प्रदूषण को दूर करना है वहाँ यज्ञ का सूक्ष्म संदेश वैचारिक प्रदूषण को दूर करके लोक कल्याण करना है।

कर्मवाद के सुन्दर उपदेश के साथ-साथ श्रीकृष्ण जी अर्जुन के माध्यम से समस्त मानव समाज को ईश्वरभक्ति का उपदेश भी देते हैं, क्योंकि श्रीकृष्ण स्वयं भी महायोगी और उत्कृष्ट कोटि के ईश्वर भक्त थे। वे कहते हैं—

ततः पदं तत्परिमार्गितव्यं यस्मिन्गता न निवर्तन्ति भूयः ।
तमेव चाद्यं पुरुषं प्रपद्ये यतः प्रवृत्ति प्रसृता पुराणी ॥
(15.4)

'तब उस पद की खोज करनी चाहिए जहाँ पहुँचकर कर्तव्य मार्ग से कभी निवृत्त नहीं होते। मैं भी तो उस पद की प्राप्ति के लिए उसी आदि पुरुष परमात्मा की शरण में जाता हूँ, जिससे यह सनातन वैदिक पद्धति फैली हुई है।' आगे ईश्वर की स्थिति को समझाते हुए कहा है—

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति ।

भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्ररूढानि मायया ॥ 18.61

'हे अर्जुन! ईश्वर प्राणिमात्र के हृदय में प्राणिमात्र को अपनी रचनाशक्ति के द्वारा यन्त्ररूढ करके घुमाता हुआ स्थित है।'

तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत ।

तत्प्रसादात्परां शान्तिं स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतम् ॥

'हे भारत! अपनी सम्पूर्ण भक्ति भावना एकाग्र करके तू उसकी ही शरण में जा, उस प्रभु के प्रसाद से तुझे परमशान्ति और अक्षय प्रभु भक्त का पद प्राप्त होगा।' अतः स्पष्ट है मन्दिर, मस्जिद, गिरिजाघर आदि में भटकने से नहीं अपितु मनुष्य अपने हृदय में ही ईश्वर की सच्ची उपासना कर सकता है।

अन्त में मैं कह सकता हूँ कि मनुष्य जीवन में गीता की भूमिका विशिष्ट, असंदिग्ध और निर्दिष्ट रूप से स्वीकार्य है। भटके हुए एवं पतित मनुष्यों के लिए गीता अनुकरणीय एवं पथप्रदर्शक है।

सत्यार्थप्रकाश प्रश्नोत्तरी

दशम समुल्लास के प्रश्नोत्तर

□ कन्हैयालाल आर्य, उपप्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक



गतांक से आगे....

प्रश्न 717. 'सखरी' 'निखरी' क्या है ?

उत्तर-'सखरी' जो जल आदि में अन्न पकाये जाते और जो घी-दूध में पकाते हैं, वह 'निखरी' अर्थात् चोखी। यह भी इन धूर्तों का चलाया हुआ पाखण्ड है, क्योंकि जिसमें घी-दूध अधिक लगे उसको खाने में स्वाद और उदर में चिकना पदार्थ अधिक जावे इसलिए यह प्रपंच रचा है। नहीं जो अग्नि से पका हुआ पदार्थ 'पक्का' और न पका हुआ 'कच्चा' है। जो पक्का खाना और कच्चा न खाना है, यह भी सर्वत्र ठीक नहीं, क्योंकि चने आदि कच्चे भी खाये जाते हैं।

प्रश्न 718. द्विज अपने हाथ से रसोई बना के खावें या शूद्र के हाथ की बनाई खावें ?

उत्तर-शूद्र के हाथ की बनाई खावें, क्योंकि ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यवर्णस्थ स्त्री-पुरुष विद्या पढ़ाने, राज्य पालने और पशुपालन, खेती और व्यापार के काम में तत्पर रहें। आर्यों के घर में शूद्र अर्थात् अशिक्षित स्त्री-पुरुष पाकादि सेवा करें, परन्तु वे शरीर, वस्त्र आदि से पवित्र रहें। घर में जब रसोई बनावें तब मुख बांधके बनावें, क्योंकि उनके मुख से उच्छिष्ट और निकला हुआ श्वास भी अन्न में न पड़े। आठवें दिन और नखच्छेदन करायें। स्नान करके पाक बनाया करें। आर्यों को खिलाके आप खावें।

प्रश्न 719. शूद्र के छुए हुए पके अन्न के खाने में जब दोष लगते हैं, तो उसके हाथ का बनाया कैसे खाया जा सकता है ?

उत्तर-यह बात कपोलकल्पित और झूठी है, क्योंकि जिन्होंने गुड़, चीनी, घृत, दूध, पिसान, शाक, फल, मूल खाया उन्होंने जानों सब जगत् भर के हाथ का बनाया और उच्छिष्ट खा लिया। क्योंकि जब शूद्र, चमार, भंगी, मुसलमान, ईसाई आदि लोग खेतों में से ईख को काटते, छीलते, पीलकर रस निकालते हैं तब मलमूत्रोत्सर्ग करके उन्हीं बिना धोये हाथों से छूते, उठाते, धरते, आधा सांठा चूस, रस पीके, आधा उसी में डाल देते और रस पकाते समय उस रस में रोटी भी पकाकर खाते हैं। जब चीनी बनाते हैं तब पुराने जूते की जिसके तले में विष्टा, मूत्र, गोबर, धूली लगी रहती है, उन्हीं

जूतों से उसको रकड़ते हैं। दूध में अपने घर के उच्छिष्ट पात्रों का जल डालते, उसी में घृतादि रखते और आटा पीसते समय भी वैसे ही उच्छिष्ट हाथों से उठाते और पसीना भी आटे में टपकता जाता है, इत्यादि। फल, मूल, कन्द में भी ऐसी ही लीला होती है। जब इन पदार्थों को खाया तो जानो सबके हाथ का खा लिया।

प्रश्न 720. फल, मूल, कन्द और रस इत्यादि अदृष्ट में हम दोष नहीं मानते ?

उत्तर-वाह जी वाह ! सत्य है कि जो ऐसा उत्तर न देते तो क्या धूड़ राख खाते ? गुड़, शक्कर मीठी लगती, दूध-घी पुष्टि करता है, इसलिए यह मतलब सिन्धु क्या नहीं रचा है ? अच्छा जो अदृष्ट में दोष नहीं तो भंगी वा मुसलमान अपने हाथों से दूसरे स्थान में बनाकर तुमको आकर देवें, तो खा लोगे वा नहीं ? जो कहो कि नहीं तो तुम्हारे मतानुसार अदृष्ट में भी दोष है। हां, मुसलमान, ईसाई आदि मद्य-मांसाहारियों के हाथ का खाने से आर्यों को भी मद्य-मांसादि खाना-पीना अपराध पीछे लग पड़ता है परन्तु आपस में आर्यों का एक भोजन होने में कोई भी दोष नहीं दीखता। जब तक एक मत, एक हानि-लाभ, एक सुख-दुःख परस्पर न मानें तब तक उन्नति होना बहुत कठिन है। परन्तु केवल खाना-पीना ही एक होने से सुधार नहीं हो सकता, किन्तु जब तक बुरी बातें नहीं छोड़ते और अच्छी बातें नहीं करते तब तक बढ़ती के बदले हानि होती है।

प्रश्न 721. आर्यावर्त में विदेशियों का राज्य होने के क्या-क्या दुष्परिणाम हुए ? **उत्तर-**आपस में फूट, मतभेद, ब्रह्मचर्य का सेवन न करना, विद्या न पढ़ना-पढ़ाना वा बाल्यावस्था में अस्वयंवर विवाह, विषयासक्ति, मिथ्याभाषणादि कुलक्षण, वेदविद्या का अप्रचार आदि निन्दित कर्म हैं। जब आपस में भाई-भाई लड़ते हैं तभी तीसरा विदेशी आकर पंच बन बैठता है। क्या तुम लोग महाभारत की बातें जो पांच सहस्र वर्ष के पहले हुई थीं, उनको भी भूल गये ? आपस की फूट से कौरव, पाण्डव और यादवों का सत्यानाश हो गया, सो तो हो गया परन्तु अब तक भी वही रोग पीछे लगा है। न जाने यह भयंकर राक्षस कभी छूटेगा वा आर्यों को सब सुखों से छुड़ाकर दुःखसागर में डुबा मारेगा ? **क्रमशः अगले अंक में.....**

सदा सुख की चाहत

□ यश वर्मा, मन्त्री, आर्यसमाज मॉडल टाउन, यमुनानगर मो० 9416446305

योगवाशिष्ठ रामायण में आता है कि वशिष्ठ ऋषि श्रीराम से कहते हैं कि हे राम, जो बोध से रहित है परन्तु चल ऐश्वर्य से बढ़ा है, तुच्छ अज्ञान उसे नष्ट कर देता है। जैसे बलरहित सिंह को गीदड़, हिरण आदि भी मार सकते हैं। बोध से विवेक रूपी फल का जन्म होता है। जैसे जानकार नाविक समुद्र से पार कर देता है वैसे सम्यक् ज्ञान संसाररूपी भवसागर से पार कर देता है। सम्यक् ज्ञान अर्थात् सही ज्ञान। सही ज्ञान तो यही है कि सदा सुख में रहें।

वशिष्ठ ऋषि के कहने का भाव है जिसके पास ऐश्वर्य है तो है परन्तु सही ज्ञान रूपी बल नहीं है, उसे सदा सुख प्राप्त नहीं होता। कोई विद्वान् अथवा संत महात्मा हमें कहे कि जा बेटा दो घण्टे सुखी रहना, फिर दुःखी हो जाना। हम कहेंगे कि यह कैसा आशीर्वाद है? फिर वह कहेंगे दो दिन सुखी रहो फिर दुःखी हो जाना। हम कहेंगे यह भी ठीक नहीं है। फिर वह कहेंगे दो सप्ताह, दो मास, दो वर्ष या एक जन्म सुखी रहना, अगले जन्म दुःखी हो जाना। हम कहेंगे यह भी ठीक नहीं। हमें तो सदा सुख चाहिए। साथ में स्वतन्त्रता चाहिए। किसी पक्षी अथवा जानवर को पिंजरे में बन्द कर दो, फिर देखो वह कैसे फड़फड़ाता है। ऐसे ही हम एक कमरे में बैठे हैं अन्दर से कुण्डी लगा रखी है तो ठीक है लेकिन कोई बाहर से कुण्डी लगा दे तो हम स्वतन्त्र अनुभव नहीं करते। जैसे-बड़े-बड़े नेताओं को कई बार हाउस अरैस्ट कर दिया जाता है। घर-परिवार सुख-सुविधा होते हुए भी दुःख का अनुभव करते हैं। हम इस दुनिया में स्वतन्त्र रहते हुए सदा सुख चाहते हैं।

बात आ गई दुनिया की। एक बार विद्वानों की एक गोष्ठी चल रही थी कि यह दुनिया क्या है? पहला विद्वान् कहता है कि यह दुनिया एक मुसाफिरखाना है। सब यहां पर यात्री हैं। यात्रा पर आए हैं। कब यात्रा प्रारम्भ हुई और कब समाप्त हो जाएगी कुछ पता नहीं। इतने में वहां से एक साधु उठने लगे तो एक दूसरे संत ने पूछ लिया, आप भी यात्री हैं, हां मैं भी यात्री हूँ। अच्छा अपना लोटा संभालकर रखना। मैं तो सदा लोटा संभालकर रखता हूँ। पहला संत

कहता है कि मेरी बात समझे नहीं। साधु कहता है कि आप ही समझा दो। मेरा अभिप्राय मन रूपी लोटे से है। अब बताओ आपका लोटा आपके पास है या नहीं। साधु ने आंखें बन्द की तो कभी हरिद्वार, कभी काशी, कभी पहाड़ों और नदियों के दृश्य, कभी 25 वर्ष पहले छोड़े हुए बच्चे और व्यवसाय। हम सबको दुनिया में रहना इस प्रकार है कि अपना मनरूपी लोटा अपने पास रखे व इसे साफ रखें।

दूसरा विद्वान् कहता है कि यह दुनिया एक युद्धस्थल है। हम सब सैनिक हैं। कभी हम बाहर वालों से लड़ रहे हैं तो कभी अन्दर वालों से बाहर वाला पड़ोसी, कार्यालय का कर्मचारी या अधिकारी, व्यवसाय में मालिक या मजदूर, सड़क पर चलता कोई व्यक्ति, घर में कोई भी सदस्य या रिश्तेदार अथवा अपने काम, क्रोध आदि से हमारा युद्ध चलता रहता है।

तीसरा विद्वान् कहता है कि यह दुनिया तो नौका है। हवा चाहे जिधर ले जाये। अब तो पश्चिमी सभ्यता इस कदर फैल गई है कि अपनी वैदिक संस्कृति और अपनी परम्पराओं को ही भूल बैठे हैं। मस्तिष्क की ठंडक, आंख की शर्म, वाणी की नम्रता और हृदय का रहम न जाने कहाँ खो गए हैं। एक दूसरे को मरने मारने पर उतारू हो गए हैं।

चौथा विद्वान् कहता है कि यह दुनिया तो लेन-देन की मण्डी है। उसने एक कथानक द्वारा समझाया कि दो व्यक्ति गांव से व्यापार के लिए निकले और मुम्बई जा पहुंचे। वहां व्यापार करते-करते काफी धन कमाया। लगभग दस वर्ष बीते तो सोचा अब घर चलें। दोनों चल पड़े। एक को रास्ते में लालच आ गया। सोते समय दूसरे की रास्ते में हत्या करदी और उसका मैडिकल सर्टिफिकेट भी बनवा लिया कि उसकी प्राकृतिक मृत्यु हुई है। घर जाकर उसके परिवार को पचास हजार रुपये दे दिए व बता दिया कि उसकी प्राकृतिक मृत्यु हो गई है। उसके परिवार ने विश्वास कर लिया। इस व्यक्ति ने विवाह किया बहुत सुन्दर पुत्र हुआ। धन-धान्य तो था ही। पढ़ाया-लिखाया पुत्र को, वह जवान हुआ उसका विवाह निश्चित कर दिया। लड़का बहुत बीमार हुआ, सारा धन बीमारी पर लग गया। कोठी-कार सब

बिक गया लेकिन वह ठीक नहीं हुआ। एक दिन पिता अपने पुत्र के पास बैठा था तो पुत्र पिता को कहता है कि तुमने मुझे पहचाना, पिता कहता है कि तुम मेरे पुत्र हो। पुत्र कहता है मैं तुम्हारा वही मित्र हूँ जिसकी तुमने हत्या की थी। यह कहकर उसने एक हिचकी ली और देह त्याग दी। इस विद्वान् ने कहा कि यह दुनिया लेन-देन की मण्डी है। जैसे कर्म करते हैं वैसे भुगतने पड़ते हैं।

पांचवां विद्वान् कहता है कि यह दुनिया निर्वाचन स्थल है। कभी आर्यसमाज का, कभी गुरुकुल का, कभी केन्द्रीय सभा का, कभी पंचायत, कमेटी, एम.एल.ए., एम.पी., प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति का निर्वाचन है तो कभी हम घर पर कपड़े का सिलैक्शन करते हैं कि आज कौन-से कपड़े पहनने हैं तो कभी दाल-सब्जी का रिलैक्शन करते हैं। घूमने जाना है तो कहाँ जाना है, शिमला, मंसूरी, नैनीताल, मनाली या यूरोप, यू.एस.ए., इंग्लैण्ड आदि।

छठा विद्वान् कहता है कि यह दुनिया तो अकस्मात् है। यहां आना-जाना लगा रहता है। कब जन्म हो, कब मृत्यु हो जाए, कुछ पता नहीं। अगला विद्वान् बोला कि यह दुनिया बड़ी अजीब चीज है। कोई यहाँ रो रहा है तो कोई हंस रहा है।

यह दुनिया एक यात्रा है, युद्धस्थल है, नौका है, लेन-देन की मण्डी है, निर्वाचन स्थल है, अकस्मात् है, तो फिर मनुष्य का चैन कहाँ है? इस दुनिया में रहना तो मनुष्य को है। यह दुनिया तो मनुष्य के विचारों से बनती है। जैसा वह सोचता है वैसी उसकी दुनिया बन जाती है। सुखी रहने की आदत डालो तो सुखी रहोगे, दुःखी रहने की आदत होगी तो दुःखी रहोगे। चेहरे पर सदा मुस्कुराहट रखकर देखो, सारी दुनिया मुस्कुराती नजर जाएगी। एक गुरुजी के दो शिष्य थे। गुरुजी ने सोचा आज इनकी परीक्षा लेते हैं। दोनों को थोड़े-थोड़े फूल दे दिए और कहा, जाओ एक-एक फूल उस व्यक्ति को बांटकर आओ जो तुम्हें मुस्कुराता हुआ मिले। दोनों शिष्य फूल लेकर चल दिए। एक शिष्य सारे फूल एक घण्टे में बांटकर आ गया। दूसरा शिष्य देर शाम बिना फूल बांटे आया। गुरुजी ने दोनों से इस विषय पर बात की। पहले शिष्य ने बताया जो लोग मुझे जानते थे उन्हें दूर से देखकर मुस्कुराता चला गया। उन्होंने भी मुस्कुराकर मुझे से पूछा, क्या तुम मुझे जानते हो? तब मैंने भी उन्हें एक

फूल दे दिया और कहा कि अब जान गया हूँ। दूसरे ने बताया कि मैं सबको देखता गया परन्तु मुझे कोई मिला ही नहीं जो मुस्कुरा रहा हो।

बात चल रही थी मनुष्य की। ऐतरेय उपनिषद् में आता है देवताओं ने पूछा हम कहां रहें? भगवान् ने बहुत सुन्दर गाय प्रकट कर दी। देवताओं ने कहा कि इसे तो बांधकर दूध दोह लेते हैं और कभी-कभी डंडे से पिटाई भी कर देते हैं। तब भगवान् ने एक अति सुन्दर बलिष्ठ घोड़ा प्रकट कर दिया। देवताओं ने इसे देखकर कहा है तो अच्छा परन्तु इसे बगी में जोत दिया जाता है, चाबुक से मारा जाता है। इस प्रकार भगवान् ने कई जानवर प्रकट किए परन्तु उन्हें कोई पसन्द नहीं आया। अन्त में मनुष्य प्रकट किया तब देवताओं ने कहा यह उत्तम है, ठीक है।

अष्टचक्रा नवद्वारा, देवानां पुरयोध्या ॥

लेकिन हम मनुष्य किसे कहें। राम को कहें या रावण को, कृष्ण को कहें या कंस को, रामदेव को कहें या राम रहीम को, दयानन्द को कहें या जहर देने वाले जगन्नाथ को। आज तो मानव ही मानव का दुश्मन बना हुआ है। ऐसे-ऐसे हथियार, बम्ब बना लिए हैं, चाहें तो मिनटों में ही मानव जाति को ही समाप्त कर दें। महर्षि दयानन्द लिखते हैं कि मनुष्य वही है जो दूसरों के लाभ-हानि व सुख-दुःख को अपना लाभ व हानि तथा अपना सुख-दुःख समझे। जरा विचार करें क्या हम इस कसौटी पर खरे उतरते हैं। आज के मनुष्य को दूसरे की जरा भी उन्नति सुहाती नहीं है। थोड़ा-सा कोई गाड़ी चलाते हुए आगे निकल जाए तो आज का मनुष्य कई बार उसकी हत्या तक कर देता है। कोई दूसरा जरा-सा उन्नति कर ले तो आज का मनुष्य भुन जाता है और द्वेष करने लग जाता है।

मानवता को बचाना हो तो यजुर्वेद का एक मन्त्र ही काफी है—

ईशावास्यमिदं सर्वम् यत्किञ्च जगत्यामजगत्।

तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्॥

वेद के एक-एक मंत्र में मनुष्य के जीवन के लिए गहन रहस्य छिपा हुआ है। आओ हम इस मन्त्र पर विचार करते हैं—

ईशावास्यमिदं सर्वम् अर्थात् ईश्वर वास कर रहा है सभी स्थान पर। कण-कण में, अणु-अणु में ईश्वर बसा

हुआ है, लेकिन हम उस ईश्वर को ही भुला बैठे हैं। वह हमें नजर नहीं आता। उसे देखने वाली दृष्टि चाहिए। इस आंख से थोड़े ही न दिखाई देगा। सूर्य है तो उसे इस आंख से देख सकते हैं, लेकिन दृष्टिहीन व्यक्ति तो सूर्य को भी नहीं देख सकता। भौतिक जगत् हो या ईश्वर हो, उसे देखने वाली शक्ति चाहिए। प्रभु दर्शन की इच्छा होगी तभी तो प्रभु के दर्शन होंगे। एक परिवार के दस छोटे बड़े सदस्य मेले में गए। वापिस आए तो किसी ने पूछ लिया, मेले में क्या देखा? सभी ने अलग-अलग उत्तर दिया। जिसमें जो अच्छी थी उसने वही देखा। इसी प्रकार जब हमारे ईश दर्शन की तीव्र इच्छा होगी तभी तो वह हमें दिखाई देगा। एक बार एक राजा था वह किसी से मिलता नहीं था। उसका देश बिल्कुल रामराज्य जैसा था। चारों ओर खुशहाली, लोग अति प्रसन्न।

एक बार लोगों ने सोचा कि हम बहुत प्रसन्न हैं परन्तु हमने कभी अपने राजा को नहीं देखा। उसके दर्शन करने चाहिए। लोग मंत्री से मिले और राजा से मिलने की इच्छा प्रकट की। मंत्री ने लोगों की इच्छा राजा को बताई। राजा ने कहा यह मुझसे नहीं मिलना चाहते। मंत्री ने कहा, वह सचमुच आपके दर्शन करना चाहते हैं। राजा ने कहा कि आने वाली एक तारीख को प्रातः 10 बजे से 4 बजे तक उनको दर्शन दूंगा। सभी को यह बात सूचित कर दी गई। एक तारीख को राजा 10 बजे निश्चित स्थान पर बैठ गया। बहुत बड़ा मैदान था। गेट पर बड़े-बड़े बैनर लगा दिए गए व माइक पर अनाउंसमेंट चलती रही कि अन्दर जो भी सामान है वह आप जितनी मात्रा में ले जाना चाहें, मुफ्त/फ्री ले जा सकते हैं। वहां पर बेशकीमती वस्त्र, कारें, फर्नीचर, खाद्यसामग्री, सोना, चांदी, हीरे, मोती जो भी आप सोच सकते हैं अकूत मात्रा में रख दिया गया। लोग आए तो बहुत खुश हुए। एक बार-दो बार-तीन-चार-पांच बार लेते गए और कहते गए कि राजा को अगली बार मिल लेंगे। इस प्रकार सायं 4 बजे राजा उठ गया। जाकर मंत्री को कहा कि मैं न कहता था कि ये लोग मेरे दर्शन नहीं चाहते। हमारा भी इस संसार में वही हाल है। सारी उम्र सांसारिक पदार्थों को ही एकत्र करने में ही निकल जाती है और प्रभु से बिना मिले ही मौत की घण्टी बज जाती है।

क्रमशः अगले अंक में.....

पौराणिक मित्रों से प्रार्थना

तुम महापुरुषों के गौरव को, मिटाना छोड़ दो।
झूठे आरोपों को इन पर, अब लगाना छोड़ दो॥
श्री राम जी, श्री कृष्ण जी, तो ईश्वर के भगत थे।
ईश्वर अवतार अब, इनको बताना छोड़ दो॥
शिक्षा इनकी ग्रहण कर लो, इनके गुण धारण करो।
स्वांग भर महापुरुषों के, अब तो नचाना छोड़ दो॥
रामलीला में न इन से, भीख मंगवाओ कभी।
ऐसा अब अपमान तो, करना कराना छोड़ दो॥
धर्मपत्नी कृष्ण जी की थी केवल एक रुक्मिणी।
काहन राधा गोपियों का, अब बताना छोड़ दो॥
है यदि कुछ भी तुम्हें, इन्सानियत का पास गर।
पत्थरों की मूर्तियों पर, सिर झुकाना छोड़ दो॥
मन के मन्दिर में प्रभु की, ज्योति के दर्शन करो।
असली मन्दिर है यही, नकली ठिकाना छोड़ दो॥
काली भैरों पर करो ना जीव हत्या को कभी।
बकरे भैंसे देवियों पर, अब चढ़ाना छोड़ दो॥
जीवित माता पिता की सेवा करो खिदमत करो।
मुर्दे कुछ खाते नहीं, भोजन पहुँचाना छोड़ दो॥
वक्त है अब भी संभल जाओ तुम प्यारे भाइयो।
वेद मार्ग पर चलो, मजहबी फंसाना छोड़ दो॥
धर्म शास्त्रों को पढ़ो, सत्यज्ञान को हासिल करो।
पुराणों की अश्लील गाथाएं, सुनना-सुनाना छोड़ दो॥
बुद्धि दी परमात्मा ने, 'सेवक' इससे काम लो।
सीधे मार्ग पर चलो, अब उल्टा जाना छोड़ दो॥

मगन ईश्वर की भक्ति में, अरे मन क्यों नहीं होता,
पड़ा आलस में मूर्ख रहेगा, कब तलक सोता?
जो इच्छा है तेरे कट जायें, सारे मैल पापों के,
प्रभु के प्रेम जल में क्यों नहीं अपने को तू धोता?
विषय और भोग में फंसकर, न कर बर्बाद जीवन को,
दमन कर चित्त की वृत्ति, लगा ले योग में गोता।
धर्म ही एक ऐसा है, जो होगा अन्त में साथी,
न पत्नी काम आएगी न बेटा और न कोई पोता।
भटकता जा बजा नाहक वृथा सुख के लिए सालिग,
तेरे हृदय के भीतर ही बहे आनन्द का स्रोत।

—सूबेदार करतारसिंह आर्य, सेवक आर्यसमाज
गोहानामण्डी (सोनीपत)

रोहिंग्या मुसलमान : मजहबी उन्माद

□ डॉ० बिजेन्द्रपाल सिंह, चन्द्रलोक कालोनी, खुर्जा (उ.प्र.)



म्यांमार से निकाले रोहिंग्या मुसलमानों के लिए मानवता, मानवाधिकार वाले, धर्मनिरपेक्षता का पाठ पढ़ाने वाले शोर मचा रहे हैं और रोहिंग्याओं को शरण देने की वकालत कर रहे हैं, परन्तु जो अत्याचार उन्होंने वहां के हिन्दुओं के साथ किया है उस पर उनके मुंह से एक शब्द भी नहीं निकलता। क्या एक पक्ष के लिए बोलना ही धर्मनिरपेक्षता है? क्या यही मानवता है? जो उन्होंने अर्थात् रोहिंग्या मुसलमानों ने वहां के हिन्दुओं के साथ कुकृत्य किया है? क्या उन्हें इस बीभत्स नरसंहार के लिए क्षमा कर दिया जाये। ऊपर से देश में शरण दी जाए? किसलिए। इसलिए कि उन्होंने वहां महिलाओं के साथ अमानवता का कार्य किया है? उनके सिंदूरों को पोंछा, बिन्दियों को हाथ से नोंचा, उन्हें जबरन मुसलमान बनाया, हथियारों से भयभीत किया, उनके सामने उनके बच्चों, भाइयों, पति, सास-ससुर, माता-पिता को हाथ-पैर बांधकर फरसों व धारदार हथियारों से काटा, यातनाएं दीं और वहां दफना दिया। ऐसे वहां रखाइन में हिन्दुओं के नरककालों के ढेर मिले हैं, पचास के शव मिले हैं, एक हजार की आबादी वाला गांव श्मशान बना दिया, सब मार दिए गए।

इनकी इस अत्याचार की प्रवृत्ति के कारण ही बर्मा की सरकार ने वहां से इनकी नागरिकता ही समाप्त कर दी इनके लिए अपना मजहब ही सब कुछ है। मानव, समाज व राष्ट्र कुछ नहीं। इसलिए बौद्ध धर्म प्रधान इस देश में ये सहस्रों वर्ष से रह रहे परन्तु बौद्धों से अपने विचारों की साम्यता नहीं कर पाए। इनकी प्रवृत्ति अत्याचार व हिंसा की थी जबकि बौद्धमत अहिंसावादी।

इन्होंने वहां चौकी पर आतंकवादी हमला किया। इनका मजहब विश्वासघात पर टिका है। जिस थाली में खाओ उसी में छेद करो। जर्मनी फ्रांस में जो आतंकवादी हमले हुए वह इसका ही पर्याय है। अमेरिका का एफिल टॉवर तोड़ना इसका ही परिणाम है, क्योंकि इनका उद्देश्य ही आतंकवाद फैलाना है। म्यांमार में वहां की प्रजा अहिंसक जनता पर अत्याचार किये दमनचक्र चलाया।

रोहिंग्या मुसलमान मूलतः बांग्लादेशी प्रवासी हैं। वहां वर्मा के हिन्दुओं के साथ इन्होंने अत्याचार किये। उनको

मारा, घर उजाड़ दिए, इनकी लड़ाई गैर मुस्लिमों अर्थात् बौद्धों से थी ही अतः हिन्दुओं का कत्लेआम भी इन्होंने किया। बौद्ध गया मन्दिर में बम ब्लास्ट किए तो वहां से जो हमलावर पकड़ा गया उस हमलावर ने बताया कि म्यांमार में मुस्लिमों के लिए बौद्ध मन्दिर पर हमला किया। यह लोग मजहब के नाम पर कहीं की भड़ास कहीं निकाल लेते हैं।

म्यांमार में रखाइन में हजारों हिन्दुओं को मार दिया गया। उनके नरककाल वहां अब भी निकाले जा रहे हैं। घर के घर खाली कर दिये। अनेक बच्चे अनाथ हो गए जिनके साथ उनका माता या पिता कोई नहीं है। जैसे तैसे कहीं आतंकवादियों के हाथ नहीं पड़े आज अनेक सहस्रों बच्चे म्यांमार के शिविरों में रह रहे हैं। स्त्रियां बेसहारा हो गईं। दुधमुहे बच्चे जिनको इस दुनिया का ही पता नहीं क्या है क्या नहीं शिविरों में पड़े हैं। बच्चों के सामने उनके परिजनों की व माता-पिता के सामने बच्चों की हत्या कर दी गई।

अनेक महिलाओं को साथ ले गए। उनका मत परिवर्तन किया गया। उनको इतना भयभीत कर दिया कि उनके मुंह से शब्द भी नहीं निकलता वह उनकी आंखों के सामने जो खूनी खेल खेला गया बयां नहीं कर सकते। भय से त्रस्त हैं, वे आज दुनिया के लिए आतंकवाद और वह भी इस्लामी आतंकवाद एक खतरा बनकर मंडरा रहा है।

इतना सब होते देख मानवाधिकार आयोग व अन्य राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाएं चुप हैं। जब हिन्दुओं पर अत्याचार होते हैं तो क्यों सब चुप रह जाते हैं? क्या मुसलमान ही इंसान हैं? जो कश्मीर से हिन्दू पण्डितों को भगा दें, मार दें, चाहे पाकिस्तान से आए शरणार्थी हों, जिनके आज तक कुछ नहीं बोला गया। क्या हिन्दुओं पर अत्याचार अत्याचार नहीं है? लिखने को बहुत कुछ है, इतिहास गवाह है कि हमलावरों ने सदैव नरपिशाचों की भांति पाशविकता का खेल खेला। मोहम्मद बिन कासिम ने एक लाख बीस हजार हिन्दुओं को कटवाकर फिकवा दिया था। उसकी मृत्यु के बाद तीस हजार पुरुष 20 हजार स्त्रियां कैदखानों में बन्द मिली थीं। सुबुक्तगीन, गजनवी, गौरी, खिलजी, कुतुबुद्दीन एबक इल्तुतमिश, अलाउद्दीन, शाह अब्दाली, जैसे लुटेरों ने खून की होली खेली थी। वही आज भी खून बहाया जा रहा है। कोई

क्रमशः पृष्ठ 14 पर.....

गुरु-शिष्य—बिगड़ते रिश्ते

□ प्राचार्य अभय आर्य, रोहतक

'धर्म' के ज्ञान के अभाव में सामान्य लोग समाज में विभिन्न कार्यों के सम्पादन के लिए कानून, मर्यादाएं बनाते हैं, वे कानून और मर्यादाएं समाज को सुचारु रूप से न चलाकर इसके उलट उसको उलझा देते हैं। इससे व्यवस्थाएं बिगड़ने के साथ-साथ रिश्तों का औचित्य भी बिगड़ जाता है। ऐसे ही एक अत्यन्त महत्वपूर्ण रिश्ते की आज गरिमा को अत्यन्त ठेस पहुंची है और वह रिश्ता है—गुरु और शिष्य का। यही वह रिश्ता है जहाँ मिलकर अक्षर ज्ञान के साथ-साथ व्यवहार, सदाचार की नींव रखी जाती है। लेकिन इस रिश्ते का औचित्य बिगड़ने से वह नींव हिल गई है व सारा समाज अव्यवस्था, अराजकता की आंधी से कंपायामान है। विडम्बना यह कि यह नियम-कानून बनाने वाले न तो स्वयं ऋषि हैं, न ही ऋषियों को जानने व मानने वाले हैं। यही कारण है कि इनके बनाए नियम गुरु-शिष्य के मध्य स्वार्थ, द्वेष की खाई गहरी व विस्तृत करते जा रहे हैं।

द्रोण जैसे गुरु जो विभिन्न परीक्षाओं पर अर्जुन को खरा पाकर उसे अपने पुत्र की भांति ही सभी अस्त्र-शस्त्रों का ज्ञान देते हैं व उसके सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर बनने की कामना करते थे। पाण्डवों जैसे शिष्य जो द्रौपदी के पुत्रों के हन्ता अश्वत्थामा को गुरुपुत्र समझकर जीवनदान दे देते हैं। गुरु विरजानन्द जैसे पढ़ाने वाले जो दयानन्द को तप की भट्टी में तपाते हैं। दयानन्द जैसे शिष्य जो कष्टों को विनम्रता से, कृतज्ञता से सहन करके, विद्याभास्कर से अपनी आत्मा को आलोकित कर गुरु आज्ञा से समाज हित अपना जीवन दान दे देते हैं। रिश्तों की ऐसी निकटता लाने के लिए हमें फिर से ऋषिप्रणीत मर्यादाओं को अपनाना होगा।

इन मर्यादाओं के अनुसार गुरु का सदाचारी होना आवश्यक है। ऋषि ठीक कहते हैं कि जिसकी स्वयं की इन्द्रियां काबू नहीं वह बाहर की प्रजा को काबू नहीं कर सकता, उसे अनुशासन में नहीं चला सकता। इसीलिए कहा है—'वृत्तं यत्नेन संरक्ष्यं ब्राह्मणेन विशेषतः' (महाभारत, वनपर्व) ब्राह्मण को विशेष रूप से प्रयत्नपूर्वक सदाचार की

ही रक्षा करनी चाहिए।

आजकल बड़े-बड़े डिग्री होल्डर तो मिल जायेंगे, लेकिन सदाचार के नियमों को जानने वाले व अपनाने वाले बिरले ही मिलेंगे। इस विषय में यही एक शिक्षा है—

पठकाः पाठकाश्चैव ये चान्ये शास्त्रचिन्तकाः ।

सर्वे व्यसनिनो मूर्खा यः क्रियावान् स पण्डितः ॥

पढ़ने वाले, पढ़ाने वाले तथा शास्त्र का विचार करने वाले। ये सब तो व्यसनी मूर्ख ही हैं (=सदाचार को न अपनाने की दशा में)। पण्डित तो वही है जो अपने शास्त्रोक्त कर्तव्य का पालन करता है।

अध्यापक का कर्तव्य यही है कि वह मन तथा इन्द्रियों को बुराइयों से रोके, अग्निहोत्र में तत्पर रहे, ब्राह्ममुहूर्त में उठना, योगाभ्यास करना आदि कर्तव्य निभाने में कभी आलस्य न करें। 'व्यवहारभानु' पुस्तक में ऋषि जी अध्यापक और विद्यार्थी का एक कर्तव्य यह भी लिखते हैं कि दिन-रात विद्या के विचार में लगे रहें। जब ऐसे अध्यापक होंगे तभी इस रिश्ते का औचित्य सुरक्षित होकर व्यवस्थित समाज का निर्माण होगा।

अब इस संदर्भ में शिष्य के कर्तव्य को लेते हैं। आज के व्यवस्थापकों ने 'शिष्य' के साथ 'कर्तव्य' शब्द छोड़ा ही नहीं, सर्वत्र इस सम्बन्ध में अधिकार की ही चर्चा होती है। अधिकारियों, अभिभावकों, शिष्य के सामने अध्यापक पैसे लेने वाले नौकर की भांति बनकर रह गया है। आज की व्यवस्थाओं में ये लोग जब चाहें, उसका अपमान कर सकते हैं। आज हम इस सत्य से कैसे आंख बन्द कर सकते हैं कि छोटी कन्याओं के बालकों को भी पता है कि यदि अध्यापक की कड़ाई और अनुशासन से बचना है तो माता-पिता के सामने इसकी कोई शिकायत लगा दी जाए, चाहे वह शिकायत झूठी हो। फिर अभिभावक आते हैं, उनकी आंखों में, हृदय में अध्यापक के प्रति घृणा का भाव होता है, फिर जो कुछ होता है वह बालक स्वयं अपनी आंखों से देखता है। इन खबरों को 'मीडिया' में हवा मिलती है और फिर नए कानून बनते हैं। कहां तो जंगलों में अध्यापकों के

क्रमशः पृष्ठ 12 पर.....

भूलकर भी न पीएं फ्रिज का पानी!

मित्रो! कितनी भी गर्मी पड़े फ्रिज का ठण्डा पानी या बर्फ मिलाया हुआ पानी कभी मत पियो। मित्रो, पहले यह जान लीजिए आयुर्वेद के अनुसार ठण्डे पानी की परिभाषा क्या है? शरीर का तापमान है 37 डिग्री सेल्सियस। 37 डिग्री से नीचे का सभी पानी ठण्डा है। 37 डिग्री तक पानी शरीर सहन कर सकता है। तो बात ऐसी है मित्रों जब भी आप फ्रिज का ठण्डा पानी पीते हैं तब पेट में ठण्डा पानी जाता है अब पेट आपका गर्म है और पानी ठण्डा। तो अन्दर जाकर झगड़ा होता है या तो पेट पानी को गर्म करता है या पानी पेट को ठण्डा करता है। आप एक मिनट के लिए मान लीजिए आपने बहुत ठण्डा पानी पिया है और पानी ने पेट को ठण्डा कर दिया। पेट ठण्डा होते ही हृदय ठण्डा हो जाएगा क्योंकि पेट और हृदय का आपस में संबंध है। हृदय के ठण्डा होते ही मस्तिष्क ठण्डा हो जाएगा। क्योंकि इन दोनों का भी आपस में संबंध है और मस्तिष्क के ठण्डा होते ही शरीर ठण्डा हो जाएगा। शरीर के ठण्डा होते ही आपको घर से बाहर निकाल कर फेंक दिया जाएगा। वह सब लोग जो आपको लिपटकर प्रेम करते हैं, वे आपको छूना भी पसन्द नहीं करेंगे क्योंकि शरीर ठण्डा हो गया और वह एक ही बात ही बोलेंगे जल्दी लेकर जाओ क्यों रखा हुआ है? अन्तिम संस्कार कब है? क्योंकि यहाँ शरीर के ठण्डा होने का अर्थ आपकी मृत्यु से है। तो मित्रो, यह ठण्डा पानी पीने की गलती मत करिए।

अब इस सारी बात का दूसरा भाग समझिए

जब बहुत ठण्डा पानी आप पीयेंगे तो पेट उस पानी को गर्म करेगा। क्योंकि उसे आपको जिन्दा रखना है। तो ये भगवान् की व्यवस्था बनाई हुई है लेकिन गर्म करने के लिए उसको ऊर्जा चाहिए। अब ऊर्जा कहाँ से आएगी? ऊर्जा आएगी रक्त में से। तो सारे शरीर का खून पेट में आएगा। अब थोड़ी देर के लिए कल्पना कीजिए सारे मस्तिष्क का खून पेट में चला गया और हृदय का खून पेट में चला गया। आंतों का खून पेट में चला गया। तो हर एक अंग को खून की कमी आएगी। मस्तिष्क को अगर तीन मिनट ब्लड सप्लाई रुक गई तो ब्रेन डैड हो जाएगा। इस तरह हृदय को एक से डेढ़ मिनट ब्लड सप्लाई रुक गई तो

हृदय डैड हो जाएगा। बाकी सभी अंग तो ऐसे ही खत्म हो जायेंगे। इसलिए कहा गया है कि ठण्डा पानी पीना बहुत ठण्डा रिस्क लेने के बराबर है।

अब इस सारी बात का तीसरा भाग समझिए

हमारे शरीर में दो आंत होती हैं छोटी आंत व बड़ी आंत। बड़ी आंत का काम हमारे शरीर में से मल को बाहर निकालना है। जो भी हम खाते हैं, पचने के बाद जो अवशेष बचता है, वह मल के रूप में बड़ी आंत द्वारा बाहर निकालता है। बड़ी आंत देखने में बिल्कुल एक खुले पाइप की तरह होती है अब जैसे ही एकदम से आप ठण्डा पानी पीते हैं तो यह बड़ी आंत एकदम से सिकुड़कर बन्द हो जाती है अब बार-बार आपने ठण्डा पानी पी-पीकर इसे पूरा बन्द कर दिया। तो सुबह आपको स्टूल पास नहीं होगा, टॉयलेट नहीं आएगी, आप जोर लगा-लगाकर पागल हो जायेंगे लेकिन पेट साफ नहीं होगा। अर्थात् आपको कब्जियत का रोग हो जाएगा। आयुर्वेद में कब्जियत को मदर ऑफ डिजीज कहते हैं। सभी बीमारियों की जड़ है कब्जियत। अगर आपको कब्जियत का रोग हो गया और कुछ लम्बे समय तक रहा तो एक-एक करके आपको सभी बीमारियां आएंगी। यूरिक एसिड, कोलेस्ट्रॉल, हार्ट ब्लॉकेज, शुगर आदि। इसलिए फ्रिज का ठण्डा पानी आपके शरीर के लिए बहुत ही ज्यादा खतरनाक है।

मित्रो! अमेरिका और यूरोप वाले बहुत अधिक ठण्डा पानी पीते हैं, वे पानी को पांच-छह दिन फ्रिज में रखते हैं, फिर उसमें आइस क्यूब डाल-डालकर पीते हैं। इसका परिणाम क्या होता है, सुबह एक-एक घण्टे वे टॉयलेट में बिताते हैं, पेट साफ ही नहीं होता। कभी आप उनसे पूछिए कि आपने ये टॉयलेट सीट कोबेट सीट अर्थात् बैठने वाली क्यों बनवाई है? भारतीय सीट क्यों नहीं बनवाई? आपको जवाब मिलेगा कि भाई, भारतीय डिजाइन वाली सीट पर आप पांच मिनट से ज्यादा नहीं बैठ सकते क्योंकि जो पोजिशन है वह पांच मिनट में ही थका देती है, हम लोगों को घंटा-घंटा बैठना पड़ता है, क्योंकि पेट साफ नहीं होता इसलिए ये वेस्टर्न सीट ही चुनते हैं। इतना ही नहीं लोग टॉयलेट में पुस्तक, अखबार, मैगजीन आदि भी रखते हैं,

क्योंकि घण्टे भर बैठना है तो टाइम पास के लिए भी तो कुछ चाहिए। वैसे टॉयलेट किताबें या अखबार पढ़ने के लिए नहीं बना, लेकिन उन लोगों की मजबूरी है।

अब हमारे देश के कुछ पढ़े-लिखे मूर्खों ने उनकी नकल कर टॉयलेट में अखबार, किताबें आदि लेकर जाना शुरू कर दिया है और ऐसा करके वे अपने आपको आधुनिक समझने लगे हैं मगर यह गलत है। मित्रो! बिना सोचे-समझे जब किसी की नकल की जाती है तो ऐसा ही होता है। उन लोगों की मजबूरी को हम अपना फैशन बना रहे हैं, बड़ी विडम्बना है।

मित्रो! इन सारी समस्याओं का मूल कारण है ठण्डा पानी। ज्यादा ठण्डा पानी आप कभी मत पीना यह आपके स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। आपको अगर पीना है तो मिट्टी के घड़े में रखे पानी को पीयें, क्योंकि मिट्टी के घड़े में रखे पानी को आप जब भी चैक करेंगे, उसका तापमान 36 से 33 डिग्री के आसपास होगा। हमने पहले ही बता दिया है कि आपके शरीर का सामान्य तापमान 37 डिग्री रहता है और घड़े के पानी का तापमान भी लगभग आपके शरीर के बराबर ही होता है, इसलिए घड़े का पानी आपको कभी नुकसान हीं पहुंचा सकता। यही कारण है कि सदियों पहले आयुर्वेद में कहा गया है कि घड़े का पानी सबसे अच्छा होता है और हमारे देश में पुराने समय से लोग घड़े का पानी पीते आए हैं। इसका एक अहम् कारण और भी है। मिट्टी का घड़ा हमारे देश में करोड़ों गरीब कुम्हारों द्वारा बनाया जाता है। इससे उनकी रोजी-रोटी जुड़ी है मगर जब से प्रेशर कुकर, प्लास्टिक की बोतलें, थर्मोकॉल के गिलास, फ्रिज आदि उपकरण आए हैं तब से देश के करोड़ों कुम्हारों का रोजगार छिन गया है। इतना ही नहीं दीवाली पर पहले लोग मिट्टी के दिए अपने घरों में लाते थे मगर आज उनकी जगह भी विदेशी लाइट्स ने ले ली है। दीवाली जैसे त्यौहार पर पहले हम अपनी लक्ष्मी विदेशी देश को (उनका सामान खरीदकर) दे देते हैं और रात में पूजा करते हैं, कामना करते हैं कि हमारे घर में लक्ष्मी सुख और समृद्धि लेकर आए। यदि हम सभी पुरानी परम्परा को जीवित रखते हुए दोबारा से घड़े का पानी पीना आरम्भ करें तो न केवल हमारा स्वास्थ्य ठीक रहेगा बल्कि इससे देश के लाखों गरीब परिवारों को रोजगार भी मिलेगा।

साभार : गुरुकुल दर्शन-डॉ संजीव गोयल

गुरु-शिष्य—बिगड़ते..... पृष्ठ 10 का शेष.....

पास विद्यार्थी पढ़ते थे, आज शहरों में भी मशीनों की निगरानी में अध्यापक व विद्यार्थी का रिश्ता आ गया है।

ब्रह्मचारी के मुख्य कर्तव्य पर प्रकाश डालता 'महाभारत' शान्तिपर्व का यह श्लोक कौन पढ़ाए—

न चाऽऽत्यधिकारेण सेवेत द्विषतो न च।

एषाश्रमपदस्तात ब्रह्मचारिण इष्यते॥

ब्रह्मचारी के लिए यही आश्रम धर्म अभीष्ट है कि वह अपने अधिकार का प्रदर्शन करते हुए व्यवहार न करे, द्वेष रखने वालों का संग न करे।

'व्यवहारभानु' में इसी के अनुकूल शिक्षा देते हुए ऋषि जी लिखते हैं कि विद्यार्थी आचार्य की ताड़ना पर प्रसन्न रहें, क्रोध कभी न करें, ...घमण्ड से न बोलें, ...उपकार मान के कृतज्ञ हों।

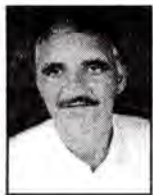
लेकिन दुर्भाग्य ऐसी शिक्षाओं से शून्य लोग बालकों के ठेकेदार बनकर समितियां बनाते हैं, हुडदंग और उलझन का माहौल उत्पन्न कर इन रिश्तों में खटास पैदा करते हैं। कोई सरकार बनती है तो वह तुष्टिकरण की नीति से ग्रसित होती है, दूसरी मत-पंथ के आग्रह से। यही कारण है कि न तो 'व्यवहारभानु' जैसी उपयोगी पुस्तकें ही पाठ्यक्रम का हिस्सा बन पाती हैं और न ही विद्यार्थियों के हित के लिए वैदिक आर्य विद्वानों की समितियां ही सरकार गठित करती हैं। आज सरकार, समितियां जाने-अनजाने में ऐसा वातावरण तैयार कर रहे हैं, जो विद्यार्थियों को अभिमान, अशिष्टता, मिथ्याभाषण के रास्ते पर ले जा रहा है। ऐसे में आर्य विद्वानों का कर्तव्य है कि वे विद्यालयों में जाकर अध्यापक व विद्यार्थियों के कर्तव्यों पर प्रकाश डालें। इसी रिश्ते की गरिमा पर सभ्य व उन्नत समाज की नींव टिकी है। स्वामी धर्मदेव जी गुरुकुल पिल्लूखेड़ा व युवा ईश्वर आर्य कालवा पिछले काफी समय से विद्यालयों में प्रचार कर रहे हैं। सबको करना चाहिए। सरकार ऐसी मण्डलियों को मान्यता व आर्थिक सहायता दे तो इन समस्याओं से निश्चित छुटकारा मिले।

छोटा विज्ञापन बड़ा लाभ

**'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक समाचार पत्र में
विज्ञापन देकर लाभ उठायें।**

‘वेदों की ओर लौटो’ अभियान में तेजी लाई जाएगी

रोहतक। मा० रामपाल आर्य प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक में प्रैस-वार्ता में बताया कि सभा ने ‘वेदों की ओर लौटो’ अभियान को गति देने के लिए 22 अक्टूबर, 2017 को अन्तरंग सभा की बैठक बुलाई गई। उन्होंने कहा कि वैसे तो पूरे प्रदेश में वेदों के प्रचार-प्रसार के लिए 9 वेदप्रचार वाहन प्रचार कार्य में जुटे हुए हैं। अब उनके साथ वेदप्रचार मण्डल के पदाधिकारियों व अन्तरंग सभा के अधिकारी व सदस्यों को भी लगाया जाएगा ताकि वेदप्रचार अभियान को तीव्र गति मिल सके।



उन्होंने बताया कि पांच जिलों पंचकूला, अम्बाला, यमुनानगर, कुरुक्षेत्र व कैथल की जिम्मेदारी डॉ० देवव्रत आचार्य महामहिम राज्यपाल हिमाचल प्रदेश ने गुरुकुल कुरुक्षेत्र की लगा दी है। उसके लिए उन्होंने तीन वेदप्रचार वाहन, तीन भजन-मण्डलियां, तीन उपदेशक तथा ग्यारह व्यायाम शिक्षकों को गांव-गांव, कस्बे-कस्बे तथा शहर-शहर में वेदप्रचार अभियान में जुटा दिया है जिन्होंने अब तक लगभग तीन जिलों के 350 गांवों में वेदप्रचार कर चुके हैं।

करनाल व पानीपत के लिए आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल जी.टी. रोड पानीपत के निदेशक ने एक वेदप्रचार वाहन, एक भजनमण्डली तथा एक उपदेशक अप्रैल मास से ही वेदप्रचार के लिए लगा रखी है, जो अब तक लगभग 109 गांव में वेदप्रचार कर चुके हैं। जीन्द जिले में सभा के संरक्षक स्वामी धर्मदेव जी व श्री ईश्वरसिंह आर्य प्रधान वेदप्रचार मण्डल जिला जीन्द के नेतृत्व में उनकी पूरी टीम लगी हुई है जिन्होंने अब तक 150 से अधिक गांव में वेदप्रचार कर लिया है।

फरीदाबाद, पलवल व गुरुग्राम के लिए गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ जिला फरीदाबाद का वेदप्रचार वाहन आचार्य ऋषिपाल और तीनों जिलों के वेदप्रचार मण्डल के अधिकारियों की देखरेख में वेदप्रचार में लगा हुआ है। उन्होंने अब तक लगभग 100 गांवों में वेदप्रचार कर लिया है।

सोनीपत, रोहतक, झज्जर व भिवानी जिलों में श्री रमेश आर्य सभा-वेदप्रचाराधिष्ठाता के नेतृत्व में सभी वेदप्रचार मण्डल के अधिकारी वेदप्रचार अभियान में जुटे हुए हैं, अब तक उन्होंने 200 गांवों में प्रचार कार्य कर लिया है।

सभाप्रधान जी ने बताया कि 2 अक्टूबर, 2017 को आर्यसमाज जलियावास जिला रेवाड़ी में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने दोनों जिलों महेन्द्रगढ़ व रेवाड़ी को आधुनिक सुविधाओं, जिसमें मंच, माइक, लाइट व दरी आदि का प्रबन्ध है, वेदप्रचार रथ भेंट किया गया। 10 अक्टूबर 2017 को दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार में जिला हिसार, फतेहाबाद व सिरसा के वेदप्रचार मण्डल अधिकारियों को वैसे ही रथ भेंट किया है। अब पूरे प्रदेश में वेदप्रचार वाहनों, भजनोपदेशकों, उपदेशकों आदि का प्रबन्ध कर लिया है। इस तरह पूरे प्रदेश में एक बार वेदप्रचार प्रत्येक गांव में हो जाएगा तब सभी प्रचार वाहनों को जिला मेवात में प्रचार के लिए उतारा जाएगा।

सभाप्रधान ने प्रदेशवासियों से अपील की कि इस बार आप अपने पुत्र व पुत्रियों को समझा-बुझाकर प्रदूषण रहित दीपावली मनाएं। हमारी संस्कृति में इस त्यौहार को घी के दीपक व यज्ञ (हवन) द्वारा वातावरण को शुद्ध करने की परम्परा रही है। परन्तु अब कई वर्ष से पटाखे छोड़कर वातावरण को दूषित किया जा रहा है। दीपावली के दस दिन बाद तक भी इस वातावरण में सांस लेना कठिन हो जाता है विशेषकर अस्थमा के रोगियों का तो जीना मुश्किल हो जाता है। इसलिए सभी अभिभावक अपने बच्चों के अन्दर ऐसी भावना भरें कि वे प्रदूषण फैलाने की बजाय घी के दीपक जलाकर यज्ञ (हवन) द्वारा वातावरण को शुद्ध करें या उनकी आस्था धर्म के साथ जोड़कर समझाएं। उन्हें बताएं कि तुम जितने पैसे पटाखों पर खर्च करते हो, उतने पैसे किसी धार्मिक संस्था में दान करें। जैसे—गऊशाला, स्कूल, गरीब बच्चों की फीस आदि में इससे वातावरण प्रदूषण रहित रह सकेगा और आपका पैसा उचित स्थान पर लगेगा। इससे आपका आत्मबल तो बढ़ेगा ही परोपकार करने की भावना आप में आयेगी तथा अच्छे बच्चों में आपकी गिनती होगी।

इस अवसर पर श्रीमती सुमित्रा आर्या सभा कोषाध्यक्ष, आचार्य सर्वमित्र आर्य सभा-प्रस्तोता, श्री रमेश आर्य-सभा-वेदप्रचाराधिष्ठाता, श्री सुभाष आर्य, श्री सुरेन्द्र आर्य, श्री कर्णसिंह मोर, श्री रोशनलाल आर्य, श्री बलजीत आर्य, श्री हवासिंह राठी, बहन दया आर्या, श्री राजू, श्री रामफल आर्य आदि अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

श्री कृष्णचन्द्र के गुण गाओ

□ पं० नन्दलाल निर्भय पत्रकार, भजनोपदेशक

युगनायक श्री कृष्णचन्द्र के, सब नर-नारी गुण गाओ।
ईश्वर के सच्चे भक्त बनो, पावन वैदिक पथ अपनाओ॥
अन्याय बड़ा था धरती पर, जब चारों ओर अन्धेरा था।
सब भूल गए थे धर्म कर्म, दानव दल का तब फेरा था।
साधु-सन्त थे आतंकित, दुष्टों ने डाला डेरा था।
ज्ञानी-ध्यानी अपमानित थे, गुण्डों का यहाँ बसेरा था।
इतिहास पुराना याद करो, विद्वान् बनो तुम सुख पाओ।
ईश्वर के सच्चे भक्त बनो, पावन वैदिक पथ अपनाओ॥
वेद सभ्यता सदाचार को, भूल गए थे नर-नारी।
खाओ पीओ मौज उड़ाओ, कहते थे भ्रष्टाचारी।
छीना-झपटी मची हुई थी, व्याकुल थी जनता सारी।
देवों के इस आर्यावर्त में, गौर्वें जाती थीं मारी।
भारत की थी दुर्दशा बहुत, तुम समझो और समझाओ।
ईश्वर के सच्चे भक्त बनो, पावन वैदिक पथ अपनाओ॥
जरासंध, शिशुपाल यहाँ, निशदिन करते थे शैतानी।
दुर्योधन कंस दुराचारी, पापी करते थे मनमानी।
भीष्म द्रोण अरु कृपाचार्य, दिखा रहे थे नादानी।
तिरस्कृत होते थे ईश्वर, भक्त विदुर जैसे ज्ञानी।
पढ़ो महाभारत को मित्रो! उच्च शिखर पर चढ़ आओ।
ईश्वर के सच्चे भक्त बनो, पावन वैदिक पथ अपनाओ॥
ईश्वर ने भारी कृपा की, श्रीकृष्ण पधारे भारत में।
वेद विरोधी दुष्ट सभी, केशव ने मारे भारत में।
शिशुपाल कंस अरु शाल्व दैत्य, सब रिपु संहारे भारत में।
श्री कृष्णचन्द्र ने धर्मीजन, सब पार उतारे भारत में।
भारत के नवयुवकों जागो, मत इधर-उधर धक्के खाओ।
ईश्वर के सच्चे भक्त बनो, पावन वैदिक पथ अपनाओ॥
उग्रवाद आतंकवाद का, भारत में है जोर सुनो।
देशद्रोही धूर्त कुकर्मी, मचा रहे हैं शोर सुनो।
लो चक्र सुदर्शन हाथों में, तुम दुष्टों का संहार करो।
श्री कृष्णचन्द्र बनजाओ तुम, प्यारे भारत के कष्ट हरो।
कहता है 'नन्दलाल निर्भय' कर्तव्य निभाओ, योद्धाओ।
ईश्वर के सच्चे भक्त बनो, पावन वैदिक पथ अपनाओ॥

संपर्क-आर्यसदन बहीन, जनपद पलवल (हरयाणा)

मो० 9813845774

योग व चरित्र निर्माण शिविर सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक व गुरुकुल कुरुक्षेत्र एवं वेदप्रचार मण्डल जिला जीन्द के योग शिक्षक रोहतास आर्य द्वारा खरक गागर गांव के आर्यन पब्लिक स्कूल में 10 दिवसीय योग व चरित्र निर्माण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर के दौरान बच्चों को वैदिक नित्य कर्म (आसन, प्राणायाम, सन्ध्या, उपासना, सत्संग, स्वाध्याय) का ज्ञान दिया गया। शिविर के अन्तिम दिन योग प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें किरण व काजल प्रथम, कोमल व साहिल द्वितीय, मन्दीप व आशीष तृतीय रहे। इस शिविर के समापन समारोह में देवयज्ञ किया गया। देवयज्ञ पर स्कूल के कुलपति राजमल कुण्डू व शिक्षक वर्ग सत्यवान, प्रवार, सतवीर शर्मा उपस्थित रहे। इस अवसर पर स्कूल के प्रधानाचार्य राजमल कुण्डू ने बच्चों को उपदेश दिया कि शिविर व भजनों के माध्यम से प्राप्त ज्ञान को अपनी दिनचर्या का अंग बनाएं। अन्त में सभा की तरफ से बच्चों व शिक्षक वर्ग को आर्ष साहित्य इनाम में दिया गया।

रोहिंग्या मुसलमान..... पृष्ठ 9 का शेष.....

हिन्दुओं के सिर काटकर मीनार खड़ी करता था तो मैदान में सिरों को बिछवाता था और कोई हिन्दुओं के बच्चों को हाथी से कुचलवाता था। आज भी वही जघन्य व पैशाचिक खेल हिन्दुओं के साथ खेला जा रहा है। परन्तु उसकी कोई आवाज उठाने वाला नहीं, सब चुपचाप तमाशा देख रहे हैं। सदैव से विदेशी हमलावर हिन्दुओं के साथ कल्लेआम का खतरनाक खेल खेलते आ रहे हैं।

मानवाधिकार आयोग व अन्य संगठन मुस्लिमों के लिए ही क्यों बोलते हैं, जब हिन्दुओं पर अत्याचार हो तब नहीं बोलते। रोहिंग्या मुसलमानों को भारत में शरण नहीं देनी चाहिए। इसके अनेक कारण हैं पहले तो यह मानवताहीन हैं। भारत इतना धनाढ्य नहीं कि सबको शरण दे भारत में भी आज इतनी गरीबी है कि लाखों बच्चे भूखे सोते हैं, लाखों माताएं भूखी रहकर अपने बच्चों को पालती हैं। लाखों के पास घर नहीं, अपनी छत नहीं, कुपोषण से लाखों बच्चे काल-कवलित हो जाते हैं। अभी भारत आर्थिक स्थिति से संघर्ष कर रहा है, विदेशियों को शरण देने से समस्याएं और बढ़ेंगी।

समाचार-प्रभाग

संस्कारक श्रीवत्स जयन्ती समारोह एवं जीवन निर्माण शिविर सम्पन्न

ओड़िशा प्रदेश के सर्वप्रथम आर्यसमाजी, सत्यार्थ प्रकाश, संस्कारविधि आदि ऋषिकृत ग्रन्थों का ओड़िया भाषा के अद्य अनुवादक श्रीवत्स पण्डा जी का 148वां जयन्ती महोत्सव करुणा वरुणालय प्रभु की कृपा से 01.10.2017 को तनरडा गोशाला आश्रम के मन्त्री आर्यजगत् के युवा वैदिक विद्वान्, गुरुकुल हरिपुर के संचालक डॉ. सुदर्शनदेव आचार्य जी के कुशल संयोजकत्व में एवं आश्रम के समस्त पदाधिकारियों एवं कार्यकर्त्ताओं के प्रबल पुरुषार्थ से निर्विघ्न सम्पन्न हुआ। जयन्ती समारोह कार्यक्रम में गुरुकुल वेदव्यास राऊरकेला के अधिष्ठाता डॉ. देवव्रत आचार्य जी, इ. प्रियव्रत दास, माता शन्नोदेवी जी आदि तथा ओड़िशा के विभिन्न आर्यसमाजों से शताधिक आर्यमहानुभाव उपस्थित थे।

श्रीवत्स जयन्ती के अवसर पर 2-4 अक्टूबर 2017 को तनरडा आश्रम में ही त्रिदिवसीय जीवन निर्माण शिविर सम्पन्न हुआ, जिसमें सौ के लगभग प्रबुद्ध युवा शिविरार्थी भाग लिये थे, शिविर में प्रशिक्षण देने हेतु डॉ. सुदर्शनदेव आचार्य जी, गुरुकुल हरिपुर, स्वामी मुक्तानन्द जी परिव्राजक राजस्थान व ब्र. वामदेव आर्य केरल से एवं मन्त्रोच्चारण व यज्ञ व्यवस्था आदि हेतु गुरुकुल हरिपुर के ब्रह्मचारी उपस्थित थे।

वैदिक सिद्धान्त, यज्ञ, योग, आध्यात्मिकता की ओर से भटकती युवा पीढ़ी को जीवन निर्माण करने की कला सिखाने तथा उनके अन्दर वैदिक सिद्धान्तों के प्रति श्रद्धा भाव जगाने के उद्देश्य से इस शिविर का आयोजन किया गया था, अनेक शिविरार्थी दैनिक अग्निहोत्र करने और ऋषिकृत ग्रन्थों का स्वाध्याय करने का संकल्प लेकर गये। प्रभु की कृपा से यह शिविर अपने उद्देश्यों में सफल रहा।

गुरुकुल हरिपुर, जुनानी के कुलपति दिवङ्गत

गुरुकुल हरिपुर, जुनानी ओड़िशा के कुलपति महात्मा वानप्रस्थ सत्यनारायण आर्य कोलकाता, सुजानगढ़ पिछले तीन साल से अस्वस्थ चल रहे थे उनका देहावसान 92 वर्ष की आयु में 6 अक्टूबर 2017 को सायंकाल 6 बजे रायपुर में हो गया, वे पिछले 35 वर्षों से उन्होंने अपना सारा समय

समाज सेवा व जनकल्याण के लिये अर्पित किया था। प्रत्येक क्षण उनका यही विचार रहता था कि मैं किस प्रकार की अनाथ, विधवा, गरीब, असहाय दिव्यांगों की सेवा कर सकूँ।

इतनी बड़ी उम्र में भी गुरुकुल हरिपुर के सम्माननीय आचार्यों के साथ झारखण्ड, आन्ध्रप्रदेश आदि प्रान्तों में अनाथों विकलांगों को अन्न-वस्त्र वितरण हेतु गाड़ी में तीन-चार सौ किलोमीटर की यात्रा कर लिया करते थे कहा करते थे—नर सेवा ही नारायण सेवा है, इन गरीबों की सेवा करने में मुझे आनन्द आता है।

जीते हुए तो अपना सब कुछ दान में दिए ही मृत्यु उपरान्त मृतशरीर भी किसी के काम आ जाये इसके लिए उनके द्वारा मृत शरीर को चिकित्सालय में प्रदान करने की लिखित घोषणा की गई थी, तदनुसार छत्तीसगढ़ में स्थित भिलाई हास्पिटल में उनका शरीर दिया गया। उनकी आत्मा की शान्ति के लिए गुरुकुल में शान्तियज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा की गई। गुरुकुल के संचालक डॉ. सुदर्शन जी कुलपति जी के द्वारा गुरुकुल हित में किये गये कार्यों का वर्णन कर श्रद्धांजलि अर्पित किये।

विद्वान् लेखकों से निवेदन

आपके स्नेहिल आशीर्वाद से 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक को सुन्दर बनाने का प्रयास रहता है। यदि आपका चिन्तन लेख अथवा कविता के रूप में वैदिक संस्कार, विचार प्रकाशनार्थ प्राप्त हो जाये तो हमारा सौभाग्य होगा। सुविधानुसार डाक/ईमेल aryapsharyana@yahoo.in पर भी भेज सकते हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ

रोहतक-124001 सम्पर्क: 01262-216222, 8901387993

आपका अपना ही सदैव—उमेश शर्मा, सम्पादक/मन्त्री

भूल-सुधार

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक पत्रिका के वर्ष 13 अंक 16 सितम्बर द्वितीय में श्री कन्हैयालाल आर्य द्वारा लिखित लेख 'सत्यार्थप्रकाश प्रश्नोत्तरी दशम समुल्लास के प्रश्नोत्तर' विषय में 'नवम समुल्लास के प्रश्नोत्तर' भूलवश छप गया है, कृपया पाठक इसे 'दशम समुल्लास के प्रश्नोत्तर' ऐसा पढ़ें। इस असुविधा के लिए हमें खेद है। —सम्पादक

वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज लुहाना जिला रेवाड़ी का वार्षिक उत्सव 14 व 15 अक्टूबर 2017 को आर्यसमाज के प्रांगण में धूमधाम से बनाया गया। कार्यक्रम में आचार्य सत्यव्रत रोहतक, महाशय रामौतार पुरुषार्थी बिहाली, महाशय बंसीराम आर्य विद्वानों ने अपने विचार रखे। आचार्य सत्यव्रत जी ने संस्कारविधि के पढ़ने व ऋषि दयानन्द द्वारा लिखित ग्रन्थों पर चलने की विस्तार से चर्चा की। इस अवसर पर वेदप्रचार मण्डल रेवाड़ी के प्रधान महात्मा यशदेव जी महाराज, मन्त्री श्री जसवन्त कुमार आर्य, देशराज आर्य, सुखराम आर्य, श्री जगदीश आर्य, कप्तान हरपाल आर्य, यशपाल आर्य प्राध्यापक राजसिंह आर्य, रामकिशोर आर्य एवं रेवाड़ी व महेन्द्रगढ़ के आर्यसमाजों के पदाधिकारियों, सदस्यों व कार्यकर्ताओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। समापन पर आर्यसमाज लुहाना जिला रेवाड़ी की ओर से सभी विद्वानों को सम्मान के साथ विदा किया।

—कमलसिंह आर्य, सभा अन्तरंग सदस्य,
ग्राम औलान्त, जिला रेवाड़ी

भजन

टेक-उसी की दुनिया में आकर,
उसी को भूल जाते हैं।
जरा-सा रूप-धन पाकर,
मनुष्य क्यों फूल जाते हैं॥



1. मिली थी मनुष्य की काया, तू इसको पाकर गर्माया।
छोड़कर ईश्वर की भक्ति, हो डांवाडोल जाते हैं।
उसी की दुनिया में आकर, उसी को भूल जाते हैं॥
2. ओ बन्दे तेरा तन मन धन, करो धर्म देश के अर्पण।
उन्हीं को मोक्ष मिलता है, जो वेद अनुकूल जाते हैं।
उसी की दुनिया में आकर, उसी को भूल जाते हैं॥
3. तेरे पै ऋण दयानन्द का, भक्त जी और श्रद्धानन्द का।
वह जिनकी खातिर लूट बैठे, वही प्रतिकूल जाते हैं।
उसी की दुनिया में आकर, उसी को भूल जाते हैं॥
4. बनो तुम वेद के रक्षक, बनो तुम धर्म के पोषक।
यही मार्ग है वीरों का, सिंह शार्दूल जाते हैं।
उसी की दुनिया में आकर, उसी को भूल जाते हैं॥
5. कह रहा तुमको जौहरीसिंह, करो अब आर्य सत्संग।
सत्संग के जल में गोता ला, भक्तजन टूल जाते हैं।
उसी की दुनिया में आकर, उसी को भूल जाते हैं॥

—भलेराम आर्य, गांव सांघी (रोहतक) 9416972879

भजन (तर्ज-देशी)

टेक-प्रिय पत्रकार-लिख सच्चे सार-नित लगातार-
स्वार्थ न तजकैऽऽऽ



1. कलम का धनी तू पत्रकार,
फर्ज सही कर पवित्रकार।
तेरी आस करैं सत्र सुधार,
बण चरित्रदार पात्र-
सतर्क सच्च खातर-खरा रहे चात्र-
हित परमार्थ में लगकैऽऽऽ प्रिय पत्रकार-
2. निःस्वार्थ खोज-रोज-विषय-विशेष,
तूर्ता फूर्ती हो सुस्ती का ना लेष।
दृढ़ निश्चय हो लग्न हमेश,
ईर्ष्या-द्वेष तजै-दोष दूर भजै-
स्पष्ट छवि सजै-श्रेय लीजे
पुरुषार्थ में रजकैऽऽऽ प्रिय पत्रकार-
3. हरदम निर्भय निष्पक्ष कलम चलाना,
सच्ची घटना तू तूर्त उठाना।
जन-जन में अपनी साख बनाना,
लगाना पूरा पता सै-
किसकी खता दे भेद बता-कित गुढार्थ-
ना भजकैऽऽऽ प्रिय पत्रकार-
4. सुनहरासिंह नरवाल परखै सुर-ताल,
तूर्त छन्द कथै गजब-कमाल।
कर्त्तव्यनिष्ठा अति नेक ख्याल,
सारे ढाल सजग रहै-गुणज्ञान लहै-
सर्व सच्च कहै नित पार्थ न भजकैऽऽऽ प्रिय-
—सुनहरा सिंह नरवाल रिटायर्ड सब-इंस्पेक्टर हरयाणा
पुलिस रोहतक, नरवाल हाउस नियर 'ओमेक्स सिटी'
दिल्ली रोड रोहतक। मो० 09416357176

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

- | | |
|---|-------------------|
| 1. आर्यसमाज सैक्टर-3, फरीदाबाद | 2 से 4 नव० 2017 |
| 2. आर्यसमाज सैक्टर-2,6,7, बहादुरगढ़ | 12 नव० 2017 |
| जिला झज्जर | |
| 3. आर्यसमाज धनौदा (महेन्द्रगढ़) | 1 से 3 दिस० 2017 |
| (वेद पारायण यज्ञ) | |
| 4. गुरुकुल हरिपुर जुनानी पो० गोड़फूला | 27 से 29 जन० 2018 |
| जिला नुआपड़ा (ओड़िशा) — रमेश आर्य, सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता | |



शिवाजी कालोनी, रोहतक में दीपावली के अवसर पर पर्यावरण शुद्धि यज्ञ करते हुए बहन दया आर्या।



डबल पार्क, रोहतक में दीपावली के अवसर पर पर्यावरण शुद्धि यज्ञ करते हुए बहन दया आर्या।



राठी धर्मशाला भारत कालोनी, रोहतक में दीपावली के अवसर पर पर्यावरण शुद्धि यज्ञ करते हुए बहन दया आर्या।



खरावर, रोहतक में दीपावली के अवसर पर पर्यावरण शुद्धि यज्ञ करते हुए बहन दया आर्या।



पुराना आईटीआई ग्राउंड, रोहतक में दीपावली के अवसर पर पर्यावरण शुद्धि यज्ञ करते हुए बहन दया आर्या।



राजकीय विशालव कान्ही, रोहतक में दीपावली के अवसर पर पर्यावरण शुद्धि यज्ञ करते हुए सुभाष भांगवान, रोशन आर्य व जितेन्द्र शर्मा।



से० ४, रोहतक में दीपावली के अवसर पर पर्यावरण शुद्धि यज्ञ करते हुए आचार्य सर्वोपरि आर्य, मा० रामपाल आर्य, डा० सुन्दर व रमेश आर्य।



फरमाणा, मोनोपल में दीपावली के अवसर पर पर्यावरण शुद्धि यज्ञ करते हुए श्री रमेश आर्य।

ऋग्वेद

ओ३म्

यजुर्वेद



आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

दयानन्द मठ, रोहतक के तत्त्वावधान में आयोजित

आचार्य बलदेव स्मृति दिवस

दिनांक 28 जनवरी 2018 (रविवार)

स्थान : दयानन्द मठ, रोहतक

सामवेद

आप सभी सपरिवार सादर आमंत्रित हैं।

अथर्ववेद

Postal Regn. - RTK/010/2017-19
RNI - HRHIN/2003/10425

प्रेषक :

मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्द मठ, रोहतक
हरियाणा, 124001

श्री

पता

.....



आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि.) के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक उमेद शर्मा ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स के लिए
आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ रोहतक-124001 से प्रकाशित।

- सम्पादक उमेद शर्मा